"स्वस्थ मृदा–सशक्त किसान–समृद्ध भारत"

पंत प्रसार संदेश

वर्ष : 21 (अंक : 2) (अप्रैल–जून, 2026)

कुलपति संदेश

प्रिय पाठकों, आप अवगत है कि वर्तमान में हमारे देश की जनसंख्या 140 करोड़ से ऊपर पहुंच गयी है। निरन्तर बढ़ती इस जनसंख्या को बिना किसी अवरोध के खाद्यान्न उपलब्ध करवाना कृषि वैज्ञानिकों एवं अधिकारियों के लिए सदैव एक चुनातीपूर्ण कार्य रहा है। वर्ष दर वर्ष सिकुड़ती कृषि भूमि, पर्यावरण असंतुलन और भूमि की घटती उर्वरा शक्ति उद्देश्य प्राप्ति को और कठिन बनाती है। मृदा स्वास्थ्य की महत्ता को समझते हुए केन्द्रीय कृषि एवं कृषक कल्याण मंत्री, भारत सरकार, श्री शिवराज सिंह चौहान की पहल पर पूरे देश में माह जून में "खेत बचाओ अभियान" चलाया गया है। इस अभियान द्वारा कृषकों को "स्वस्थ मिट्टी–सशक्त किसान–समृद्ध भारत" के बारे में जागरूक करते हुए विशेषतः मृदा स्वास्थ्य तथा संतुलित उर्वरक प्रबन्धन करते हुए वैज्ञानिक खेती किये जाने पर जोर दिया गया। मुझे विश्वास है कि यह अभियान कृषकों हेतु अत्यन्त लाभकारी रहा होगा।

साथियों, हरित क्रान्ति की जननी पंतनगर विश्वविद्यालय द्वारा कृषि के विकास हेतु न केवल अनेक उन्नतशील प्रजातियाँ विकसित की है बल्कि मशरूम उत्पादन, मौन पालन, औषधीय एवं सगन्ध पौध की खेती, कुक्कुट पालन, जैविक एवं प्राकृतिक खेती हेतु अनेक तकनीकों का विकास किया गया है। किसान भाई इन विधाओं को अपनाकर अपनी आय में उत्तरोत्तर वृद्धि कर सकते हैं। विश्वविद्यालय द्वारा वर्ष मार्च एवं अक्टूबर में किसान मेले का आयोजन किया जाता है। किसान मेले का प्रमुख आकर्षण "पंतनगर बीज" के साथ–साथ फल–सब्जी पौध व अन्य कृषि निवेशों व कृषि सम्बन्धी तकनीकी ज्ञान की सहज उपलब्धता होती है। आगामी अक्टूबर 2026 में पुनः किसान मेला आयोजित किया जाना प्रस्तावित है। इस मेले में गेहूँ, मसूर, चना, मटर व अन्य रबी फसलों के बीज आपके लिये उपलब्ध रहेंगे। मैं आह्वान करूँगा कि आगामी किसान मेले में अधिक से अधिक किसान बंधु भाग लें और नवीन विकसित तकनीकों का ज्ञान प्राप्त कर अपनी आर्थिकी सुदृढ़ कर प्रदेश और देश के विकास में सहभागी बने। मुझे आपके संज्ञान में लाना है कि गत अक्टूबर 2025 के किसान मेले में लगभग 37800 कृषकों ने प्रतिभाग करते हुए इसका लाभ उठाया।

प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा प्रकाशित पत्रिका "पंत प्रसार संदेश" का नवीनतम अंकः अप्रैल–जून, 2026 आपके हाथों में है। मुझे विश्वास है कि पत्रिका कृषि से जुड़े प्रसार कार्यकर्ताओं व कृषकों हेतु लाभकारी सिद्ध होगी। पत्रिका के प्रकाशन हेतु डा0 जितेन्द्र क्वात्रा, निदेशक प्रसार शिक्षा व डा0 बी0डी0 सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) एवं सभी सहयोगी सदस्यों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

(शिवेन्द्र कुमार कश्यप)
कुलपति

संदेश

उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्रों में कृषक–गण कठिन व प्रतिकूल परिस्थितियों में जीवन–यापन करने के लिए जाने जाते हैं। कृषि उत्पादन में अपेक्षित वृद्धि हेतु कुछ समस्याएं यथा पथरीली व कम उपजाऊ मृदा, ढालू व सीढ़ीनुमा खेत, सीमित सिंचाई के साधन, तकनीकों का अभाव के साथ–साथ जनसंख्या वृद्धि, पलायन, पारिस्थितिकी असंतुलन इत्यादि हैं। इन समस्याओं के यथोचित निराकरण पर ही पर्वतीय कृषि का भविश्य आधारित है। इन क्षेत्रों की पारिस्थितिकी संतुलन को भी दृश्टिगत रखते हुए काश्तकारों के आर्थिकी में सुधार के साथ निरन्तर हो रहे पलायन को रोकने की नितान्त आवश्यकता है। इसके लिए यथाशीघ्र उन्नत कृषि तकनीक की कार्य योजना बनाकर उसे धरातल पर उतारने की आवश्यकता प्रतीत होती है।

अपनी समृद्ध गरिमा संजोये पंतनगर विश्वविद्यालय तथा उत्तराखण्ड के विभिन्न जनपदों में स्थापित कृषि विज्ञान केन्द्र कृषकों के उत्थान हेतु सतत् प्रयत्नशील है। यहाँ के वैज्ञानिक, जनपद के सम्बन्धित अधिकारियों के साथ मिलकर दूरस्थ क्षेत्र के कृषक समुदाय के सर्वांगीण विकास हेतु निरन्तर कार्य कर रहे हैं। यहाँ मैं यह अवश्य उल्लेख भी करना चाहूँगा कि भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ द्वारा भी अनेक कृषकोपयोगी प्रसार कार्यक्रम संचालित किये जाते हैं। मैं कृषकों से अपील करूँगा कि वे बेझिझक हमसे सम्पर्क करें तथा संस्थान की गतिविधियों से जुड़े और लाभान्वित हों। मैं कृषक समुदाय से अपील करूँगा कि वे पंतनगर विश्वविद्यालय की वेबसाईट अथवा उनके प्रसार निदेशालय से सीधे सम्पर्क कर अधिक से अधिक लाभ ले सकते हैं। कृषक के लिये उपयोगी त्रैमासिक पत्रिका "पंत प्रसार संदेश" एक ज्ञानवर्धक पत्रिका है। इसके प्रकाशन समिति के सभी सदस्य प्रशंसा के पात्र है।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

(डा0 एस0एन0 सुशील)
निदेशक, भा.कृ.अ.प.–भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ

उत्तराखण्ड राज्य की भौगोलिक परिस्थितियों के दृश्टिगत राज्य के कृषि विश्वविद्यालयों, कृषि विज्ञान केन्द्रों तथा कृषि आधारित रेखीय विभागों पर कृषि उत्पादकता में वृद्धि व पर्वतीय अंचल में परम्परागत तरीके को विकसित तकनीक से जोड़ने का सामूहिक दायित्व है। यहाँ यह उल्लेखित करना समीचीन होगा कि उत्तराखण्ड में प्रचुर मात्रा में उत्पादित होने वाले मंडुवा, उगल, नौरंगी, गहत, भट्ट इत्यादि के वृहद् प्रचार–प्रसार से इन उत्पादों को बेहतर बाजार मिलेगा। कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय द्वारा जून 2026 में "खेत बचाओ अभियान" चलाया गया है, जिसमें कृषकों को मृदा स्वास्थ्य प्रबन्धन की विस्तृत जानकारी प्रदान की गयी है। मुझे विश्वास है कि कृषक इससे लाभान्वित हुए होंगें। विकसित कृषि तकनीकों को दूरस्थ क्षेत्रों में अवस्थित कृषकों तक ले जाना चुनौतीपूर्ण होता है। इस कार्य को विभिन्न कृषि विज्ञान केन्द्र अपने–अपने क्षेत्र के अटारी के सहयोग से बखूबी निभा रहे हैं। विशेषकर पर्वतीय क्षेत्रों के कृषि विकास हेतु समन्वित कृषि प्रणाली मील का पत्थर साबित हो सकता है। हमारे संस्थान भा.कृ.अनु.प.–भारतीय कृषि प्रणाली अनुसंधान संस्थान, मोदीपुरम, मेरठ द्वारा इस दिशा में अनेक तकनीक विकसित किये गये हैं। मैं कृषक समुदाय से आह्वान करूँगा कि हमारे संस्थान का द्वार आपके लिए हमेशा खुला है और मैं चाहूँगा कि ज्यादा से ज्यादा कृषक हमसे जुड़कर अपनी आजीविका संवर्धन सुनिश्चित करें।

पंतनगर विश्वविद्यालय एवं कृषि विज्ञान केन्द्र किसानों के उन्नयन हेतु विविध कार्यक्रम यथा–मशरूम उत्पादन, मत्स्य पालन, औशधीय व सगन्ध पौधों की खेती, गुणवत्तायुक्त पौध उत्पादन व वितरण, जैविक कृषि इत्यादि का सफल संचालन कर रहे हैं। मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि प्रसार शिक्षा निदेशालय, गो.ब. पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर द्वारा "पंत प्रसार संदेश" पत्रिका के अंक : अप्रैल–जून, 2026 का प्रकाशन किया जा रहा है।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु शुभकामनाएं।

(डा0 सुनील कुमार)
निदेशक, भा.कृ.अ.प.–भारतीय कृषि प्रणाली अनुसंधान संस्थान, मोदीपुरम, मेरठ

आगामी त्रैमास के कृषि कार्य : जुलाई–सितम्बर

जुलाई : मैदानी क्षेत्र–फसल

धान : फसल की रोपाई इस माह में तथा सीधी बुवाई माह के प्रथम सप्ताह तक कर लें। उर्वरक एवं खरपतवारनाशी रसायनों का प्रयोग संस्तुति के अनुसार करें।

गन्ना : जलभराव वाले खेतों में जल निकास की व्यवस्था करें। फसलों को गिरने से बचाने के लिए जड़ों पर पर्याप्त मिट्टी चढ़ायें तथा बढ़वार अच्छी होने पर 05 फीट की ऊँचाई पर बँधाई कर लें। पाइरिला, चोटी बेधक अथवा तना बेधक कीट की रोकथाम के लिए संस्तुति के अनुसार कीटनाशी रसायनों का प्रयोग करें।

मक्का : फसल में यथासमय निराई–गुड़ाई एवं सिंचाई करें तथा दो फीट ऊँची होने पर यूरिया की टॉप ड्रेसिंग करें।

सोयाबीन, उर्द, मूंग एवं अरहर : सोयाबीन की बुवाई माह के प्रथम सप्ताह में, उर्द व मूंग की बुवाई माह के द्वितीय पखवाड़े में तथा अरहर की देर से पकने वाली प्रजातियों की बुवाई माह के प्रथम पखवाड़े में पूरी कर लें। जून में बोयी गयी अरहर की फसल में विरलीकरण करें व निराई–गुड़ाई कर खरपतवार निकाल लें।

तिल एवं मूँगफली : तिल की बुवाई माह के द्वितीय पखवाड़े में तथा मूँगफली की बुवाई माह के मध्य तक कर लें।

जुलाई : पर्वतीय क्षेत्र–फसल

मंडुवा, झंगोरा, काकुन एवं रामदाना : आवश्यकतानुसार खरपतवार नियंत्रण करें। वर्शा के पश्चात् पर्याप्त नमी होने पर प्रति नाली 0.9 कि.ग्रा. यूरिया की टॉप ड्रेसिंग करें। मंडुवा, झंगोरा एवं काकुन में झौंका रोग लगने पर संस्तुति के अनुसार जैव नियंत्रक अथवा फफूँदीनाशी रसायन का प्रयोग करें।

अरहर, सोयाबीन, उर्द, मूंग, नौरंगी (राइसबीन), गहत एवं राजमा : सोयाबीन, अरहर, गहत, नौरंगी एवं राजमा में विरलीकरण करें तथा निराई–गुड़ाई कर खरपतवार निकाल लें। उर्द एवं मूंग की बुवाई प्रथम सप्ताह तक कर लें।

धान : घाटी वाले क्षेत्रों में रोपाई माह के प्रथम सप्ताह तक अवश्य कर लें। चेतकी/जेठी धान में निराई–गुड़ाई कर खरपतवार निकाल लें तथा वर्शा के पश्चात् उपयुक्त नमी होने पर 1.25 कि.ग्रा. यूरिया प्रति नाली की टॉप ड्रेसिंग करें। रोपित धान में खैरा अथवा झौंका रोग आने पर संस्तुति के अनुसार रसायनों का प्रयोग करें।

जुलाई : मैदानी क्षेत्र–सब्जी

टमाटर : बुवाई हेतु उन्नत संकर किस्मों का चुनाव करें। आखिरी जुताई के समय नत्रजन–फास्फोरस–पोटाश 160:80:80 कि.ग्रा./हैक्टेयर का छिड़काव करें। फफूँदी जनित रोग नियंत्रण हेतु जैव नियंत्रक– ट्राइकोडर्मा एवं स्यूडोमोनास 10 ग्राम/लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

बैंगन : अच्छी पैदावार प्राप्त करने के लिये पौध रोपण का कार्य माह के प्रथम पखवाड़े में 60ग60 सेमी. की दूरी पर करें। रोपण सायंकाल में करें तथा उसके बाद हल्की सिंचाई करें।

मिर्च : फलों की तुड़ाई कर बाजार भेजने की व्यवस्था करें। आगामी फसल के लिए इस माह में पौध की रोपाई 60ग45 सेमी. की दूरी पर करें।

फूलगोभी : अगेती फसल हेतु ऊँचे खेत का चुनाव करें। खेत की अच्छी तरह तैयारी कर 50ग30 सेमी. की दूरी पर पौधों की रोपाई करें।

मूली : अगेती फसल प्राप्त करने के लिए ऊँचे स्थान पर मूली की बुवाई की जाती है। इसके लिए 30 सेमी. की दूरी पर हल्की सी मेड़ बनायें तथा उन पर 10–15 सेमी. की दूरी पर बीज बोयें।

भिण्डी, लोबिया : तैयार फलियों को तोड़कर बाजार भेजने की व्यवस्था करें। बीज वाली फसलों में अवांछित पौधें निकालें।

ग्वार एवं शकरकन्द : फलियों को थोड़ी कच्ची अवस्था में तोड़कर बाजार भेंजे व शकरकन्द की 60 सेमी. पर रोपाई करें।

जुलाई : पर्वतीय क्षेत्र–सब्जी

आलू : तैयार फसल की खुदाई करें तथा खड़ी फसल में आवश्यकतानुसार निराई–गुड़ाई व सिंचाई करें।

टमाटर : तैयार फलों को तोड़कर बाजार भेजें। झुलसा बीमारी से बचाव के लिए 0.2 प्रतिशत इन्डोफिल एम–45 का घोल बनाकर छिडकाव करें।

बैंगन : फसल में निराई–गुड़ाई व सिंचाई करें। तैयार फलों को तोड़कर बाजार भेजें। फल तथा तना छेदक कीट के नियंत्रण हेतु संस्तुत रसायन का छिड़काव करें।

मिर्च/शिमला मिर्च : फसल में निराई–गुड़ाई व सिंचाई करें, तैयार फलों को तोड़कर बाजार भेजें। कीट–रोग नियंत्रण की पूरी तैयारी रखें। पालक, धनियाँ, मेथी : पत्तियों की कटाई कर छोटे–छोटे बंडल बनाकर बाजार भेजें। बाजार भेजने से पूर्व पत्तियों पर पानी का छिड़काव करें।

जुलाई : मैदानी क्षेत्र–फल

आम : नए बाग लगाने हेतु रोपाई का कार्य प्रारम्भ करें। तैयार फलों को तोड़कर बाजार भेजें। नर्सरी में वीनियर कलम बांधना प्रारम्भ करें।

केला : अवांछित पत्तियों को निकाल दें। पेड़ों पर मिट्टी चढ़ा दें। फल वाले पेड़ों को गिरने से बचाव हेतु सहारा दें। नए बाग की रोपाई हेतु तलवार के शक्ल वाली पुत्तियों का चयन करें।

नीबूवर्गीय फल : बाग लगाने का कार्य प्रारम्भ करें। कैंकर नियंत्रण हेतु संस्तुत रसायन का छिड़काव करें।

अमरूद : तैयार फलों को तोड़कर बाजार भेजें। बाग में जल निकास का प्रबन्ध करें। फल विगलन रोग की रोकथाम हेतु संस्तुत रसायन का छिड़काव करें।

लीची : नए पौधे तैयार करने के लिए गूटी बांधने का कार्य इस माह अवश्य समाप्त कर लें।

आवंला : बाग की रोपाई का कार्य प्रारम्भ करें एवं जल निकास की व्यवस्था करें।

आड़ू व आलूबुखारा : भूरा विगलन रोग की रोकथाम हेतु संस्तुत रसायन का छिड़काव करें।

जुलाई : पर्वतीय क्षेत्र–फल

सेब : बाग में भूमि संरक्षी फसलों की बुआई करें। अगेती किस्मों के फलों को तोड़कर बाजार भेजें।

नाशपाती : कज्जली धब्बा व फायर ब्लाइट रोग की रोकथाम हेतु संस्तुत रसायन का छिड़काव करें।

आड़ू, आलूबुखारा एवं खुबानी : पके फलों को तोड़कर बाजार भेजें। भूरा विगलन रोग के नियंत्रण हेतु संस्तुत रसायन का छिड़काव करें।

अगस्त : मैदानी क्षेत्र–फसल

धान : रोपित धान में निराई कर संस्तुति के अनुसार नत्रजन की टॉप ड्रेसिंग करें। फसल में झौंका, खैरा व जीवाणु झुलसा रोग तथा तना बेधक कीटों के नियंत्रण हेतु संस्तुति के अनुसार रसायन का प्रयोग करें।

गन्ना : पहली बँधाई के 50 सेमी. ऊपर दूसरी बँधाई कर लें। इसमें दो पंक्तियों के तीन थानों की बँधाई एक साथ (कैंची बँधाई) की जाती है।

मक्का : फसल में नरमंजरी निकलते समय कुल नत्रजन की मात्रा का एक तिहाई भाग (30–35 कि.ग्रा./हैक्टेयर) की टॉप ड्रेसिंग कर दें।

उर्द एवं मूंग : इन फसलों में 20–25 दिन की अवस्था पर निराई–गुड़ाई कर खरपतवार निकाल लें। तना मक्खी के नियंत्रण हेतु संस्तुति के अनुसार कीटनाशी रसायन का प्रयोग करें।

अगस्त : पर्वतीय क्षेत्र–फसल

मंडुवा, झंगोरा, काकुन एवं रामदाना : मंडुवा, झंगोरा एवं काकुन में तना छेदक तथा रामदाना में पर्णजालक कीट (लीफ वेबर) का प्रकोप होने पर संस्तुति के अनुसार कीटनाशी रसायन का छिड़काव करें।

सोयाबीन : आवश्यकतानुसार निराई कर खरपतवार निकाल लें तथा फसल में कमला कीट, तना छेदक मक्खी तथा चक्र भृंग (गर्डिल

बीटिल) कीट का प्रकोप होने पर संस्तुति के अनुसार रसायनों का छिड़काव करें।

मक्का : फसल में नर मंजरी निकलते समय संस्तुति के अनुसार नत्रजन की टॉप ड्रेसिंग करें।

धान : सिंचित/असिंचित फसल में तना छेदक कीट एवं झौंका रोग तथा असिंचित धान में कुरमुला कीट के नियंत्रण हेतु संस्तुत रसायनों का छिड़काव करें। सिंचित धान में बाली निकलने से पूर्व संस्तुति के अनुसार नत्रजन की टॉप ड्रेसिंग एवं असिंचित धान में यूरिया के 02 प्रतिशत घोल का पर्णीय छिड़काव करें।

उर्द, मूंग, नौरंगी, गहत एवं राजमा : फसल में पर्ण धब्बा रोग लगने पर संस्तुत रसायन का छिड़काव करें।

अगस्त : मैदानी क्षेत्र-सब्जी

टमाटर व बैंगन : टमाटर में फल तथा तना छेदक कीट से बचाव के लिए 0.2 प्रतिशत सेविन, झुलसा बीमारी से बचाव के लिए 0.2 प्रतिशत इन्डोफिल एम–45 तथा बैंगन में संस्तुत रसायन का छिड़काव करें।

मिर्च : पौधों की वृद्धि अच्छी नहीं है तो 50 कि.ग्रा. यूरिया खड़ी फसल में डालें। कीटों तथा बीमारियों से फसल का बचाव करें।

फूलगोभी : 50 कि.ग्रा. यूरिया प्रति हैक्टेयर की दर से खड़ी फसल में डालें। मध्यकालीन गोभी की फसल के लिए खेत की आखिरी जुताई पर 100:80:80 के अनुपात में नत्रजन, फॉस्फोरस व पोटाश प्रति हैक्टेयर की दर से डालें व 45X45 सेमी. की दूरी पर रोपाई करें।

मूली : पुरानी फसल में आवश्यकतानुसार निराई–गुड़ाई व सिंचाई करें। नई फसल की बोआई करें।

भिण्डी व लोबिया : तैयार फलियों को तोड़कर बाजार भेजें। फलियों की तुड़ाई 48 घंटे के अन्तराल में करें।

अगस्त : पर्वतीय क्षेत्र-सब्जी

आलू एवं टमाटर : टमाटर में झुलसा बीमारी से बचाव के लिए 0.2 प्रतिशत इन्डोफिल एम–45 का छिड़काव करें। तैयार आलू की खुदाई कर बाजार भेजने की व्यवस्था करें।

बैंगन : फल तथा तना छेदक कीट से बचाव के लिए 0.2 प्रतिशत सेविन का घोल बनाकर छिड़काव करें।

मिर्च/शिमला मिर्च : आवश्यकतानुसार निराई–गुड़ाई व सिंचाई करें। बीमारी से बचाव के लिए 0.2 प्रतिशत इन्डोफिल एम–45 का घोल बनाकर छिड़काव करें।

पालक, धनियाँ, मेथी : तैयार पत्तियों की कटाई कर बाजार भेजें। बाजार भेजने से पूर्व छटाई करें व छोटी–छोटी गड्डियाँ बना लें।

फूलगोभी, पातगोभी : तैयार फसल की कटाई कर बाजार भेजें। नयी फसल में 50 कि.ग्रा. यूरिया प्रति हैक्टेयर की दर से डालें।

अदरक, हल्दी : तैयार अदरक की खुदाई कर साफ करें व बाजार भेजने की व्यवस्था करें। यदि फसल की वृद्धि अच्छी नहीं हो रही है तो 50 कि.ग्रा. यूरिया/हैक्टेयर खड़ी फसल में डालें।

अगस्त : मैदानी क्षेत्र-फल

आम : बाग लगाने के लिए पौधों की रोपाई करें। पौधशाला में मूलवृंत तैयार करने के लिए गुठलियों की बुआई करें। नए पौधे तैयार करने के लिए एक वर्ष पुराने मूलवृंतो पर वीनियर कलम बांधे।

केला : जल निकास की व्यवस्था करें, अवांछित पत्तियों को निकाल दें। पके घारों की तुड़ाई करके बाजार भेजें।

अमरूद : परिपक्व फलों की तुड़ाई करें। गूटी बांधने का कार्य इस माह पूर्ण करें।

पपीता : पौधशाला में बीजों की बुआई करें। तने पर बोर्डो लेप करें।

अगस्त : पर्वतीय क्षेत्र-फल

आम एवं नीबूवर्गीय फल: पेड़ों पर ब्लाइटॉक्स 50 (0.25 प्रतिशत) के घोल का छिड़काव करें।

सेब एवं नाशपाती : थालों को साफ रखें। फलों को तोड़कर बाजार भेजें। ब्लाइटॉक्स 50 का 15 दिन के अंतराल पर दो छिड़काव करें।

आड़ू, आलूबुखारा एवं खुबानी : फलों को तोड़कर बाजार भेजें।

सितम्बर : मैदानी क्षेत्र-फसल

धान : फसल में बालियाँ बनने की अवस्था पर नत्रजन की संस्तुत मात्रा की टॉप ड्रेसिंग करें। तना बेधक, फुदका कीट एवं पर्ण भित्ती व जीवाणु झुलसा रोग के नियंत्रण हेतु संस्तुत रसायनों का छिड़काव करें।

गन्ना : फसल में आवश्यकतानुसार सिंचाई एवं दूसरी बँधाई कर लें। कंडुवा एवं लाल सड़न रोग से ग्रसित पौधों को निकालकर जला दें। शरदकालीन गन्ने की बुवाई माह के द्वितीय पखवाड़े में करें तथा इसके साथ अन्तःफसल के रूप में आलू, लाही (तोरिया), राई, सब्जी मटर, मूली, गोभी, लहसुन, धनियाँ की बुवाई करें।

उर्द एवं मूंग : पिछले माह बोयी गयी फसल में निराई–गुड़ाई तथा हल्की सिंचाई करें। फसल को पीला मौजेक अथवा थ्रिप्स कीट से क्षति होने पर संस्तुत कीटनाशक का प्रयोग करें।

सोयाबीन : जल भराव की स्थिति में जल–निकास की व्यवस्था करें तथा वर्शा न हो तो फली बनते समय हल्की सिंचाई करें।

अरहर : फसल में लपेटक, फली छेदक कीट अथवा बांझ रोग की समस्या आने पर नियंत्रण हेतु संस्तुत रसायनों का छिड़काव करें।

तोरिया (लाही) एवं राई/सरसों : तोरियां की बुवाई सितम्बर द्वितीय पखवाड़ें में तथा राई की अगेती बुवाई सितम्बर के अन्तिम सप्ताह में कर लें। तिलहनी फसलों में गंधक 25–30 कि.ग्रा. प्रति हैक्टेयर प्रयोग करें।

सितम्बर : पर्वतीय क्षेत्र-फसल

मंडुवा, झंगोरा, काकुन एवं रामदाना : निम्न एवं मध्यम ऊँचाई वाले क्षेत्रों में तैयार फसलों की कटाई कर लें। देर से पकने वाली प्रजातियों में कीट एवं रोगों के बचाव हेतु संस्तुत रसायनों का छिड़काव करें।

सोयाबीन एवं अरहर : सोयाबीन में कमला कीट, तना छेदक अथवा चक्रभृंग कीट तथा अरहर में पत्ती लपेटक अथवा फली बेधक कीट के नियंत्रण हेतु रसायनों का छिड़काव करें।

मक्का : घाटी, कम व मध्यम ऊँचाई वाले क्षेत्रों में तैयार फसल की कटाई कर लें तथा ऊँचाई वाले क्षेत्रों में दाने बनने की अवस्था पर हल्की सिंचाई करें व रोग तथा कीट नियंत्रण हेतु संस्तुति के अनुसार रसायनों का छिड़काव करें।

धान : घाटियों व कम ऊँचाई वाले क्षेत्रों में चेतकी/जेठी/रोपित धान की फसल तैयार होने पर कटाई कर लें। मध्यम व ऊँचाई वाले क्षेत्रों में दाने बनते समय आवश्यकतानुसार सिंचाई करें तथा फसल में रोग अथवा कीटों के नियंत्रण हेतु संस्तुति के अनुसार रसायनों का छिड़काव करें।

उर्द, मूंग, गहत, नौरंगी एवं राजमा : उर्द, मूंग एवं गहत की तैयार फसल की कटाई कर लें। नौरंगी एवं राजमा की फसल में कीट अथवा रोग आने पर संस्तुति के अनुसार रसायन का छिड़काव करें।

तोरिया एवं पीली सरसों : घाटियों एवं कम ऊँचाई वाले क्षेत्रों में रोपित धान तथा निचले व मध्यम ऊँचाई वाले क्षेत्रों में मंडुवा, झंगोरा, काकुन, उर्द व मूंग की कटाई के पश्चात् माह के अंत तक इन फसलों की बुवाई करें।

सितम्बर : मैदानी क्षेत्र-सब्जी

टमाटर : अच्छी पैदावार के लिए इस माह में पौधों का रोपण सायंकाल में 50ग50 सेमी. की दूरी पर करें। खेत की आखिरी जुताई पर 75 कि.ग्रा. नत्रजन, 80 कि.ग्रा. फॉस्फोरस व 80 कि.ग्रा. पोटाश प्रति हैक्टेयर की दर से डालें।

बैंगन, मिर्च, भिण्डी एवं लोबिया : इन फसलों में आवश्यकतानुसार निराई–गुड़ाई व सिंचाई करें। बीज वाली फसल से अवांछित पौधों को निकालें व पके फलों से बीज निकालकर सुखायें।

फूलगोभी, पातगोभी, गांठगोभी : खड़ी फसल में 50 कि.ग्रा. यूरिया प्रति हैक्टेयर की दर से डालें। मध्यकालीन फूलगोभी की रोपाई के पूर्व आखिरी जुताई पर 75 कि.ग्रा. नत्रजन, 100 कि.ग्रा. फॉस्फोरस व 100 कि.ग्रा. पोटाश प्रति हैक्टेयर डालें।

आलू : खेत की आखिरी जुताई पर 100 कि.ग्रा. नत्रजन, 80 कि.ग्रा. फॉस्फोरस व 80 कि.ग्रा. पोटाश प्रति हैक्टेयर डालकर इस माह के आखिरी सप्ताह में अगेती आलू की बोआई करें।

पालक, धनियाँ, मेथी : इस माह अगेती किस्मों की बोआई की जा सकती है। खेत की अच्छी तरह तैयारी करें तथा बाद में 50:60:60 के अनुपात में नत्रजन, फॉस्फोरस व पोटाश प्रति हैक्टेयर की दर से डालें।

सितम्बर : पर्वतीय क्षेत्र-सब्जी

टमाटर : झुलसा बीमारी से बचाव के लिए 0.2 प्रतिशत इन्डोफिल एम–45 का घोल बनाकर छिड़काव करें।

मिर्च / शिमला मिर्च : निराई–गुड़ाई व सिंचाई करें। फलों की तुड़ाई कर बाजार भेजें।

भिण्डी / लोबिया : फलों की तुड़ाई कर बाजार भेजने की व्यवस्था करें। पकी फलियों का बीज निकालकर सुखायें।

मटर : इस माह मटर की अगेती प्रजातियों की बोआई की जा सकती है।

खीरावर्गीय फसलें : तैयार फलों की तुड़ाई कर बाजार भेजने की व्यवस्था करें। यदि कीटों का आक्रमण दिखाई दें तो 0.2 प्रतिशत सेविन का घोल बनाकर एक छिड़काव करें।

सितम्बर : मैदानी क्षेत्र-फल

आम : नए बाग की रोपाई का कार्य पूरा कर लें। शाखा गांठ कीट की रोकथाम हेतु रोगोर (0.2 प्रतिशत) व श्याम वर्ण रोग हेतु ब्लाइटॉक्स 50 का छिड़काव करें। पछेती किस्मों की गुठलियों को इकट्ठा करके पौधशाला में बुआई करें।

नीबूवर्गीय फल : पेड़ों मे नत्रजन व पोटाश की तीसरी मात्रा का प्रयोग करें। सूक्ष्म पोशक तत्वों की कमी को पूरा करने के लिए उनका छिड़काव करें।

लीची : तना छेदक कीट की रोकथाम के लिए रूई को पेट्रोल में भिगोकर छिद्रों में भर दे तथा इन छिद्रों को गीली मिट्टी से बंद कर दें।

कटहल : पके फलों के बीजों को निकाल कर बुआई करें। नए बाग लगाने के लिए रोपण का कार्य करें।

सितम्बर : पर्वतीय क्षेत्र-फल

सेब : पछेती किस्मों के फलों को तोड़कर बाजार भेजें। नर्सरी के बीजू पौधों पर टी–चश्मा चढ़ाएं। रूइया कीट की रोकथाम हेतु मेटासिस्टॉक्स का छिड़काव करें।

नाशपाती : पके फलों को तोड़कर बाजार भेजें। रूइया कीट की रोकथाम हेतु मेटासिस्टॉक्स का छिड़काव करें।

आडू एवं आलूबुखारा : पेड़ों के तनों को चूने से पोत दें। पेड़ों पर बोरेक्स का छिड़काव करें।

कृषि विज्ञान केन्द्रों की गतिविधियाँ

कृषि विज्ञान केन्द्र, मटेला (अल्मोड़ा)

- केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा 45 कृषकों के प्रक्षेत्र पर भ्रमण/ गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें 545 कृषकों को केन्द्र एवं राज्य सरकार द्वारा चलाई जा रही कृषक कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी, फसलों से सम्बन्धित तकनीकी जानकारियाँ एवं कृषिगत समस्याओं का निदान किया गया।

मा. मुख्यमंत्री द्वारा 'खेत बचाओ अभियान' स्टाल भ्रमण

- दिनांक 05.05.2026 को केन्द्र पर वैज्ञानिक सलाहकार समिति की 21वीं बैठक का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता निदेशक प्रसार शिक्षा, पन्तनगर डा. जितेन्द्र क्वात्रा द्वारा की गयी। उक्त बैठक में गत वर्ष के प्रसार कार्यक्रमों की समीक्षा की गयी एवं वर्ष 2026–27 की कार्ययोजना पर विस्तृत चर्चा की गयी। इस कार्यक्रम में पंतनगर से आये वैज्ञानिकों सहित रेखीय विभाग के अधिकारी व कृषकों ने भाग लिया।
- खेत बचाओ अभियान दिनांक 01 जून से 30 जून, 2026 तक विभिन्न क्षेत्रों में आयोजित किया गया, जिसका उदघाटन माननीय मुख्यमंत्री उत्तराखण्ड श्री पुष्कर सिंह धामी जी द्वारा विवेकानन्द पर्वतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, अल्मोड़ा में किया गया। इस कार्यक्रम में वैज्ञानिकों द्वारा प्रतिभाग किया गया तथा स्टाल लगाकर किसानो को उपयोगी जानकारियाँ दी गयी।
- उद्घाटन के पश्चात् इस खेत बचाओ अभियान के अन्तर्गत चयनित न्याय पंचायत स्तर पर कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें भारी संख्या में कृषक, प्रसार कार्यकर्ता एवं विभागीय अधिकारी भाग लिये। इन कार्यक्रमों में केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा मृदा स्वास्थ्य प्रबन्धन, सन्तुलित उर्वरकों का उपयोग, प्राकृतिक खेती, किसान क्रेडिट कार्ड, फसलों में लगने वाले रोग–ब्याधि, उन्नत प्रजातियॉ जल संरक्षण एवं रोजगारपरक कृषि उद्यमों आदि के बारे में कृषकों को जानकारियॉ प्रदान की गयी।
- दिनांक 20.06.2026 को प्रधानमत्री किसान सम्मान निधि की 23वीं किस्त तारकेश्वर (हुगली), पश्चिम बंगाल से जारी की गयी, जिसका सीधा प्रसारण केन्द्र में करते हुए निकटवर्ती ग्रामों के कृषकों को सुनाया गया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, ग्वालदम (चमोली)

- प्राकृतिक खेती विषय पर प्रशिक्षण का आयोजन दिनांक 29.04.2026 को किया गया, जिसमें वैज्ञानिकों द्वारा विस्तृत जानकारी दी गयी। कृषि विविधीकरण विषय पर दिनांक 14–15 मई, 2026 एवं 16–17 मई, 2026 को प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें क्रमशः 30 कृषकों एवं 20 प्रसार कर्मियों द्वारा प्रतिभाग किया गया।
- दिनांक 09.04.2026 को किसान दिवस के अवसर पर किसान गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें कुल 52 कृषक एवं प्रसार कर्मियों ने प्रतिभाग किया।
- भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के सहयोग से केन्द्र द्वारा संतुलित उर्वरक प्रयोग सम्बन्धी जागरूकता अभियान कार्यक्रम दिनांक 07.04.2026 से 30.05.2026 तक सफलतापूर्वक आयोजित किया गया।
- विश्व पर्यावरण दिवस दिनांक 05.06.2026 के अवसर पर वृहद वृक्षारोपण कार्यक्रम चलाया गया तथा सीमा सुरक्षा बल के जवानों एवं स्कूली छात्र–छात्राओं को पर्यावरण संरक्षण के बारे में विस्तृत जानकारी दी गयी।
- पीएम किसान सम्मान निधि के अंतर्गत माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के 23 वीं किश्त जारी करने के कार्यक्रम का लाइव प्रसारण पश्चिम बंगाल के तारकेश्वर (हुगली) से 20 जून 2026 को किया गया। यह कार्यक्रम कृषकों को सजीव प्रसारण के माध्यम से दिखलाया गया।

खेत बचाओ अभियान कार्यक्रम

- दिनांक 03.06.2026 से 30.06.2026 तक भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा आयोजित खेत बचाओ अभियान के अन्तर्गत 20 किसान गोष्ठियों के माध्यम से संतुलित उर्वरक उपयोग, प्राकृतिक खेती एवं हरी खाद का उपयोग इत्यादि पर तकनीकी जानकारी दी गयी।

कृषि विज्ञान केन्द्र, लोहाघाट (चम्पावत)

- केन्द्र द्वारा एक अनुकरणीय परीक्षण तथा प्रथम पंक्ति प्रदर्शन के अन्तर्गत कुल 13.50 हे0 में 185 कृषकों के यहाँ प्रदर्शन लगाये गये।
- प्रशिक्षणों के अन्तर्गत गृह विज्ञान के 03 प्रशिक्षणों का आयोजन किया गया, जिसमें कुल 50 कृषक महिलाओं ने प्रतिभाग किया इसके साथ–साथ केन्द्र द्वारा स्वम् सहायता समूहों व एफ.पी.ओ. के कर्मचारियों हेतु 04 प्रशिक्षणों का आयोजन किया गया।
- इस अवधि में कृषकों के दो समूहों ने भ्रमण किया इस कार्यक्रम में 42 कृषकों/ कृषक महिलाओं के साथ–साथ 06 प्रसार कार्यकर्ताओं ने प्रतिभाग कर केन्द्र पर प्रदर्शित विभिन्न तकनीकियों की जानकारी प्राप्त की। केन्द्र द्वारा चार गोष्ठियों का आयोजन किया, जिसमें अनेक किसान एवं प्रसार कार्यकर्ताओं ने प्रतिभाग किया।

औषधीय एवं सगन्ध पौधों के बारे में जागरूकता कार्यक्रम

- खेत बचाओ अभियान दिनांक 01 जून से 30 जून के अन्तर्गत 22 गोष्ठी एवं 21 जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें भारी मात्रा में किसान एवं प्रसार कार्यकर्ताओं ने प्रतिभाग किया।
- वैज्ञानिकों द्वारा विगत त्रिमास में 37 कृषकों के प्रक्षेत्र पर भ्रमण कर कुल 433 कृषकों की समस्याओं का समाधान किया गया। वैज्ञानिकों द्वारा विभिन्न कार्यक्रयों में 47 तकनीकी व्याख्यान दिये जिससे लगभग 2488 कृषक/कृषक महिलाओं ने लाभ उठाया। इसके साथ–साथ केन्द्र द्वारा विभिन्न विषयों पर विकसित प्रसार साहित्य का लगभग 650 कृषकों को वितरित किया गया।
- केन्द्र द्वारा विगत त्रैमास में करेला, पत्तागोभी, खीरा, शिमला मिर्च व स्ट्राबेरी की उच्च गुणवत्तायुक्त पौध कृषकों को उपलब्ध करायी गयी।

कृषि विज्ञान केन्द्र, ढकरानी (देहरादून)

- ग्राफिक ऐरा विश्वविद्यालय के कृषि स्नातक छात्रों द्वारा कृषि विज्ञान केन्द्र, देहरादून का भ्रमण किया गया। इन छात्रों को उन्नत किस्मों के प्रदर्शन, गुणवत्तायुक्त बीजोत्पादन, समन्वित कृषि प्रणाली के मुख्य अंगोंः बकरी पालन, सब्जी/उद्यान की खेती, जय गोपाल केंचुआ इकाई तथा मछली पालन का भ्रमण कराया गया। पी.के.वी.वाई. योजना के अंतर्गत, चकराता ब्लॉक की रावाना घाटी के 50 किसानों का एक समूह जैविक और प्राकृतिक खेती की नई तकनीकों के जानकारी हेतु केन्द्र के भ्रमण पर आया, जिन्हें केन्द्र की गतिविधियों व सम्बन्धित विषय पर विस्तृत जानकारी प्रदान की गयी।
- 'नेशनल मिशन ऑन नेचुरल फार्मिंग' के तहत कृषि सखियों के लिए पांच दिन का प्रशिक्षण कार्यक्रम 6 से 10 अप्रैल 2026 तक केंद्र में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम के दौरान वैज्ञानिकों ने प्राकृतिक खेती के लिए जरूरी चीजें जैसे बीजामृत, जीवामृत, नीमास्त्र, सौंठस्त्र और घन जीवामृत बनाने सम्बन्धी प्रायोगिक कार्य कराये गये।
- दूरदर्शन द्वारा केंद्र में ''चौपाल चर्चा'' कार्यक्रम का आयोजित किया गया, जिसमें वैज्ञानिकों और जिले के प्रगतिशील किसानों ने भाग लिया। विशेषज्ञों द्वारा किसानों को मृदा स्वास्थ्य संरक्षण, जल संरक्षण, प्राकृतिक एवं टिकाऊ खेती, संतुलित उर्वरक उपयोग तथा कृषि भूमि के संरक्षण जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर जानकारी प्रदान की गई।
- देशव्यापी ''खेत बचाओ अभियान'' (1 जून से 30 जून) का देहरादून के सहसपुर ब्लॉक के ढाकी गाँव से शुभारंभ किया गया तथा आत्मा योजना के अंतर्गत उत्कृष्ट कार्य करने वाले कृषकों को माननीय कृषि मंत्री श्री गणेश जोशी द्वारा प्रशस्ति–पत्र एवं पुरस्कार प्रदान किए। इस एक माह में वैज्ञानिकों द्वारा अलग–अलग कार्यक्रमों में स्वस्थ मिट्टी, सशक्त किसान, समृद्ध भारत के थीम पर कृषकों को जानकारी प्रदान की गयी।

खेत बचाओ अभियान में मा. कृषि मंत्री, श्री गणेश जोशी जी

- पीएम किसान निधि के अंतर्गत माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के 23 वीं किश्त जारी करने के कार्यक्रम का लाइव प्रसारण पश्चिम बंगाल के तारकेश्वर (हुगली) से 20 जून 2026 को किया गया। माननीय प्रधानमंत्री द्वारा ₹ 18,880 करोड़ से अधिक की धनराशि देश के 9.44 करोड़ से अधिक किसानों के बैंक खातों में सीधे अन्तरित की गयी। कार्यक्रम के दौरान केंद्र के प्रभारी अधिकारी, डा. ए.के. शर्मा द्वारा प्राकृतिक खेती एवं उर्वरकों के संतुलित उपयोग पर विस्तृत व्याख्यान दिया गया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, धनौरी (हरिद्वार)

- केन्द्र द्वारा रबी 2025–26 में 09 ऑन फॉर्म ट्रायल आयोजित किए गये। इंगित अवधि में 02 नए ऑन फॉर्म ट्रायल जिसमें एक महिलाओं के पोषण तथा दूसरा गन्ने में नए खरपतवारनाशी के प्रयोग पर लगाये गये हैं। अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन कार्यक्रम के अंतर्गत दलहन पर दो, तिलहन पर एक, गेहूं पर दो तथा पशुपालन, पोषण वाटिका, एफ.ओ.एम., नैनो यूरिया, परिश्रम कटौती, भिंडी उत्पादन तथा पोषण वाटिका पर एक–एक प्रदर्शन लगाए गए हैं। इस तिमाही में केंद्र के वैज्ञानिकों द्वारा 125 बार किसानों के क्षेत्र पर भ्रमण किया गया, जिसमें 2139 लाभार्थी थे। साथ ही केंद्र पर 219 किसानों द्वारा भ्रमण किया गया।
- केंद्र द्वारा इस तिमाही में 08 केंद्र पर, 17 केंद्र के बाहर तथा 05 प्रायोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। वैज्ञानिकों द्वारा खेत बचाओ अभियान के अंतर्गत 36 गोष्ठियों में भाग लिया गया, जिसमें 2204 किसान लाभार्थी थे। केंद्र द्वारा 6 वैज्ञानिक–कृषक संवादों का आयोजन किया गया जिसमें 778 प्रतिभागी थे। इसी प्रकार संतुलित उर्वरक के प्रयोग पर 12 कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिसमें लगभग 800 किसानों द्वारा प्रतिभाग किया गया। केंद्र के वैज्ञानिकों ने विभिन्न कृषि आधारित विषयों पर 14 व्याख्यान दिए, जिसमें 1690 लाभार्थी थे। वैज्ञानिकों द्वारा 06 रेडियो तथा 02 टेलीविजन वार्ताएं की गई। राष्ट्रीय तथा स्थानीय अखबारों में 13 बार केंद्र की गतिविधियों को छापा गया है। केन्द्र के प्रक्षेत्र में सब्जी नर्सरी उत्पादन, मशरूम उत्पादन, बकरी पालन, मुर्गी पालन, गो पालन आदि इकाइयों का संरक्षण एवं संवर्धन किया जा रहा है।

23वें किसान सम्मान निधि कार्यक्रम का सजीव प्रसारण

- कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा किसान सम्मान निधि वितरण कार्यक्रम का सजीव प्रसारण, विश्व

स्वास्थ्य दिवस, विश्व दुग्ध दिवस, एवं प्लास्टिक के उपयोग को घटाने हेतु जागरूकता अभियान जैसे कार्यक्रम भी आयोजित किए गए। इस तिमाही में केंद्र पर नीति आयोग की टीम द्वारा भ्रमण कर किसानों से सीधा संवाद तथा डाटा संग्रहण कार्य भी संपन्न किया गया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, ज्योलीकोट (नैनीताल)

- प्रथम पंक्ति प्रदर्शन के अन्तर्गत धान की पूसा बासमती–1847, 1509, पी0आर0–126, वी.एल.–88 प्रजातियों के 95 प्रदर्शन कृषकों के प्रक्षेत्र पर आयोजित किये गये। इसी क्रम में मडुवा की प्रजाति वी.एल.–380 का 40 प्रदर्शन कृषकों के प्रक्षेत्र पर लगाया गया।
- आर्या परियोजना के अन्तर्गत ग्रामीण युवाओं के रोजगार हेतु मधुमक्खी पालन, डेरी प्रबन्धान, मशरूम उत्पादन एवं हर्बल साबुन बनाने का प्रशिक्षण ग्रामीण युवाओं को दिया गया। कृषकों, ग्रामीण बेरोजगार युवाओं एवं प्रसार कार्यकर्ताओं हेतु 27 प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से कुल 514 कृषकों प्रशिक्षित किया गया। विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम के अन्तर्गत रेजिन से बने सजावटी सामग्रियों का प्रशिक्षण आयोजित हुआ। राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन परियोजना के अन्तर्गत चार जागरूकता कार्यक्रम आयोजित कर जीवामृत, घनजीवामृत, कुनाबजल एवं अग्नियास्त्र बनाने को प्रशिक्षण दिया गया।

खेत बचाओ अभियान में प्रदर्शनी

- पीएम किसान निधि के अंतर्गत माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के 23 वीं किश्त जारी करने के कार्यक्रम का लाइव प्रसारण पश्चिम बंगाल के तारकेश्वर (हुगली) से 20 जून 2026 को किया गया। कार्यक्रम का सजीव प्रसारण किसानों को दिखाया गया।
- गांधी पार्क, रूद्रपुर में आयोजित ''राज्य स्तरीय खेत बचाओ अभियान'' कार्यक्रम दिनांक 26 जून 2026, में केन्द्र द्वारा प्रदर्शनी लगायी गयी।
- केन्द्र द्वारा दो कृषक वैज्ञानिक संवाद कार्यक्रम, महिला स्वयं सहायता समूह की नौ मासिक बैठको के अन्तर्गत सदस्याओं को आयोपार्जन के विभिन्न आयामों की जानकारी दी गयी। वैज्ञानिकों द्वारा पारम्परिक फसलों, पर्वतीय क्षेत्रों में फलों की बागवानी एवं पर्वतीय क्षेत्रों में सब्जियों की पैदावार सम्बन्धी तकनीकों पर सामुदायिक रेडियो, जनवाणी हैलो हल्द्वानी से खेत बचाओ अभियान विषय पर वार्ता दी गयी।
- विकसित कृषि तकनीकों के व्यापक प्रचार–प्रसार सम्बन्धी 23 प्रेस विज्ञप्तियाँ स्थानीय समाचार पत्रों में प्रकाशित की गयी।

कृषि विज्ञानकेन्द्र, गैंना एंचोली (पिथौरागढ़)

- केन्द्र द्वारा कृषि एवं पशुपालन आधारित कुल 40 प्रशिक्षण कार्यक्रम सम्पन्न किए गये, जिससे कुल 1203 कृषक लाभान्वित हुए। इसी क्रम में ग्रामीण युवाओं तथा वाहय प्रसार कार्यकर्ताओं हेतु एक–एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।
- अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन कार्यक्रम के अन्तर्गत धान–3.2 है., मंडुआ–10.0 है., गहत–2.0 है., सोयाबीन–3.0 है. व गृह विज्ञान में पोषण युक्त बगीचा–0.5 है. प्रदर्शन में लगाये गये है।
- कृषकों के प्रक्षेत्र पर 167 भ्रमण कर कृषि आधारित परामर्श प्रदान किये गये। विषय वस्तु विशेषज्ञों द्वारा 02 टी0वी वार्ता एवं 04 रेडियो वार्ता का प्रसारण किया गया व दैनिक समाचार पत्रों में 12 तकनीकी समाचारों को प्रकाशित किया गया।
- केन्द्र के प्रक्षेत्र से कृषकों को उन्नत प्रजाति की सब्जियों की पौध जैसे–टमाटर, खीरा, कद्दू, लौकी, करेला, शिमला मिर्च, बैंगन, तोरई, हरी मिर्च, अचार मिर्च व औषधीय पौधों में रोजमेरी व शोभाकारी पौधे स्थानीय कृषकों को विक्रय किये गये।

चौपाल चर्चा का आयोजन

- केन्द्र द्वारा दिनॉक 19 मार्च से 19 अप्रैल 2026 तक भूमि सुपोषण अभियान कार्यक्रम, दिनॉक 20 अप्रैल से 30 अप्रैल, 2026 तक उर्वरक के संतुलित प्रयोग पर जागरूकता अभियान, दिनॉक 09 अप्रैल तथा 14 मई, 2026 को किसान दिवस कार्यक्रम में प्रतिभाग किया गया। इसी क्रम में 02 मई से 30 मई, 2026 तक खाद के संतुलित उपयोग पर जागरूकता अभियान तथा 08 जून, 2026 को डीडी किसान पर खेत बचाओ अभियान के अन्तर्गत चौपाल चर्चा में प्रतिभाग किया गया।
- वैज्ञानिकों द्वारा दिनॉक 01 से 30 जून 2026 तक ''खेत बचाओ अभियान'' कार्यक्रम में प्रतिभाग किया गया, जिससे 6910 कृषक लाभान्वित हुए। दिनॉक 20 जून, 2026 को पीएम–किसान सम्मान निधि की 23वीं किस्त जारी होने का सीधा प्रसारण केन्द्र पर कृषकों को दिखाया गया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, जाखधार (रूद्रप्रयाग)

- केन्द्र द्वारा टमाटर की हिमसोना, अर्का सम्राट, अर्का रक्षक, शिमला मिर्च की इन्दिरा, कैलीफोर्निया वण्डर, खीरे की बैली, ब्लैसा इत्यादि के प्रदर्शन संचालित हैं। क्रॉप कैफेटेरिया में बैंगन की शामली, नवकिरण, जयंत, ब्रिजेश, पी.पी.एल.–74, मूली की स्पार्कल व्हाइट, मिर्च की गोपी–520, फ्रेंचबीन की फाल्गुनी प्रजातियों को मूल्यांकन एवं प्रदर्शन हेतु लगाया गया है।
- शैक्षणिक मशरूम उत्पादन इकाई में ढिंगरी मशरूम तथा शैक्षणिक मौनपालन इकाई में भारतीय मौन को पाला जा रहा है।
- विभिन्न कृषक समूहों का केन्द्र पर भ्रमण कार्यक्रम आयोजित करते हुए उन्हें मशरूम उत्पादन, मधुमक्खी पालन, पॉलीहाउस में बेमौसमी सब्जियों का उत्पादन तथा खाद्य प्रसंस्करण से संबन्धित जानकारी दी गयी। इसी प्रकार 21 किसान गोष्ठी कार्यक्रम भी आयोजित किये गये।

खेत बचाओ अभियान कार्यक्रम

- भारत सरकार द्वारा आयोजित खेत बचाओ अभियान दिनांक 01 जून से 30 जून, 2026 तक स्वस्थ मिट्टी सशक्त किसान, समृद्ध भारत थीम के अन्तर्गत केन्द्र द्वारा विभिन्न किसान गोष्ठियों एवं जागरूकता अभियान में भाग लिया गया। इस कार्यक्रम में कृषि तथा उद्यान विभाग के अधिकारियों सहित लगभग 1786 किसानों द्वारा प्रतिभाग किया गया।
- पीएम किसान निधि के अंतर्गत माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के 23 वीं किश्त जारी करने के कार्यक्रम का लाइव प्रसारण पश्चिम बंगाल के तारकेश्वर (हुगली) से 20 जून 2026 को किया गया। इस कार्यक्रम के दौरान वैज्ञानिकों द्वारा प्राकृतिक खेती एवं उर्वरकों के संतुलित उपयोग विषय पर कृषकों को जानकारी दी गयी।

कृषि विज्ञान केन्द्र, काशीपुर (ऊधमसिंहनगर)

मा. केन्द्रीय कृषि एवं कृषक कल्याण मंत्री का खेत बचाओ अभियान कार्यक्रम में सहभागिता

- ऑन फार्म ट्रायल के अन्तर्गत तालाब को स्वस्थ रखने के लिए प्रोबायोटिक सप्लीमेंट का मूल्यांकन, पैंगेसियस मछली की प्रजातियों की वृद्धि, उत्पादन और जीवित रहने की दर का आकलन, गन्ने में लाल सड़न रोग के नियंत्रण हेतु पंत बायो–एजेंट–3 इत्यादि के आकलन का 5 है. क्षेत्रफल में 30 परीक्षण संचालित किये जा रहे हैं।
- अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के अन्तर्गत गेहूं में पीले रतुवा रोग का नियंत्रण, पोषण वाटिका, मछलियों की बढ़वार दर बढ़ाने के लिए प्राइमरी प्रोडक्टिविटी को बढ़ाना, मछलियों की मौत को रोकने के लिए ऑक्सीजन टैबलेट्स का प्रयोग, विटामिन सप्लीमेंट्स द्वारा मांसपेशियों के विकास सम्बन्धी कुल 5 है. क्षेत्रफल में 94 प्रदर्शन संचालित हो रहे हैं।
- प्रशिक्षण कार्यक्रम के अन्तर्गत केन्द्र द्वारा मधुमेह नियंत्रण हेतु मोटे अनाज, कृषि में ए.आई. का उपयोग, बासमती धान व मसालें के मूल्यवर्धन, मोमबत्ती बनाना, एक्वापोनिक्स तथा पोषण वाटिका की भूमिका विषयक 07 प्रशिक्षण आयोजित कर 308 कृषकों को प्रशिक्षित किया गया।
- प्रक्षेत्र गतिविधियों के अन्तर्गत एक्वापोनिक इकाई प्रदर्शन, बकरी पालन, साहीवाल गाय, पॉली हॉउस में टमाटर, बैंगन, मिर्च, खीरा, लौकी, कद्दू, करेला आदि का उत्पादन कर कृषकों को उपलब्ध कराया गया।
- संतुलित उर्वरक प्रयोग तथा खेत बचाओ अभियान कार्यक्रम के अन्तर्गत कुल 46 कृषि गोष्ठी का आयोजन किया गया। केन्द्र पर डा. शिवेन्द्र कुमार कश्यप, कुलपति, गो.ब. पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर, श्री त्रिलोक सिंह चीमा, मा. विधायक, काशीपुर एवं डा. जितेन्द्र क्वात्रा, निदेशक प्रसार शिक्षा का केन्द्र पर भ्रमण हुआ।
- वैज्ञानिकों द्वारा कृषकों के प्रक्षेत्र पर 29 भ्रमण, 08 व्याख्यान, 07 फिल्म शो, समाचार पत्रों में 24 तकनीकी लेख, स्कूल के विद्यार्थियों का 02 भ्रमण कार्यक्रम आयोजित किये गये।

प्रसार शिक्षा निदेशालय की गतिविधियाँ

कृषि प्रौद्योगिकी सूचना केन्द्र (एटिक)

एटिक की छठवीं सलाहकार समिति की बैठक दिनांक 08 जुलाई, 2026 को मा. कुलपति, डा. शिवेन्द्र कुमार कश्यप जी की अध्यक्षता में आहूत की गयी। बैठक में एटिक गतिविधियों की प्रगति आख्या तथा आगामी वर्ष की कार्ययोजना प्रस्तुत की गयी। एटिक सलाहकार समिति की बैठक भ्रमण पर आये 234 कृषकों/आगन्तुकों को एकल खिड़की वितरण प्रणाली के अन्तर्गत विभिन्न गतिविधियों की जानकारी एवं फसलों व सब्जियों के बीज, साहित्य उपलब्ध कराये गये। कृषकों एवं अन्य हितधारकों को ₹1,51,280.00 मूल्य के विभिन्न विषयों के कृषि साहित्य/पुस्तक एवं ₹ 95,101.00 मूल्य के विभिन्न सब्जियों के 4.85 कुन्तल बीज बीज केन्द्र के विक्रय पटल से उपलब्ध कराये गये। इस अवधि में कृषक हैल्पलाईन/कॉल सेन्टर 05944–234810 के माध्यम से किसानों एवं अन्य हितधारकों द्वारा पूछे गये 68 समस्याओं/जिज्ञासाओं का समाधान विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा किया गया।

एटिक सलाहकार समिति की बैठक

समेटी–उत्तराखण्ड द्वारा आयोजित प्रशिक्षण

समेटी–उत्तराखण्ड द्वारा इस अवधि में कुल चार प्रशिक्षण आयोजित किये गये। प्रशिक्षण के मुख्य विषय उन्नत खरीफ फसलोत्पादन तकनीक, विकसित कृषि तकनीकों के प्रयोग से आर्थिक सशक्तिकरण, आय वृद्धि हेतु कुक्कुट पालन एवं जैविक खेती– जैविक फसल एवं सब्जी उत्पादन तकनीक इत्यादि थे। विकसित कृषि तकनीकों के प्रयोग से आर्थिक सशक्तिकरण विषयक प्रशिक्षण ऑनलाइन मोड में आयोजित किया गया। इन कार्यक्रमों में कृषि विभाग के अधिकारी, प्रसार कार्यकर्ता, कुक्कुट फार्म स्कूलों के संचालक, पशुधन प्रसार अधिकारी, बी.टी.एम. एवं प्रगतिशील कृषकों सहित कुल 139 प्रशिक्षणार्थियों ने प्रतिभाग किया।

प्रशिक्षणार्थियों द्वारा खरीफ फसल प्रक्षेत्र का भ्रमण

समेटी–उत्तराखण्ड द्वारा जुलाई–सितम्बर, 2026 में आयोजित होने वाले प्रशिक्षण

क्र.सं.	विषय	दिनांक
1.	उन्नत बकरी पालन	जुलाई 08–10, 2026
2.	बाजार आधारित प्रसार	अगस्त 19–21, 2026
3.	रबी फसलोत्पादन उन्नत तकनीक	सितम्बर 09–11, 2026

कृषक प्रदर्शन इकाई

कृषक भवन एवं प्रशिक्षण केन्द्र (समेटी) के परिसर में रसायन मुक्त खेती, कृषकों के क्षमता विकास एवं कृषि शिक्षा सम्बन्धी ज्ञानवर्धन हेतु समन्वित कृषि प्रणाली इकाई स्थापित की गयी है। यह यूनिट कृषकों को प्रति इकाई कम कृषि लागत से अधिक आय अर्जन हेतु प्रेरित करती है। वर्तमान में इस प्रदर्शन प्रक्षेत्र पर पपीता, लोबिया, भिण्डी, लौकी, तोरई, करेला, खीरा, धनिया, स्वीट कॉर्न, अंजीर, नीबू, करौंदा, आम इत्यादि के प्रदर्शन संचालित हैं।

प्रशिक्षण एवं भ्रमण इकाई द्वारा आयोजित कार्यक्रम

प्रशिक्षण एवं भ्रमण इकाई द्वारा कुल 12 प्रायोजित प्रशिक्षणों का आयोजन किया गया, जिससे 540 प्रशिक्षणार्थी लाभान्वित हुए। प्रशिक्षण कार्यक्रम के विषय कृषि विविधिकरण, पशुपालन प्रबन्धन, मशरूम उत्पादन एवं प्रसंस्करण, कम लागत एवं अधिक उत्पादन के लिये जलवायु सहिष्णु फसल एवं कृषि तकनीक, बैकयार्ड कुक्कुट पालन इत्यादि से सम्बन्धित थे।

सफलता की कहानी :

आत्मनिर्भरता और महिला उद्यमिता की प्रेरणादायक मिसाल

उत्तराखण्ड के ग्राम–जवाहर नगर, विकास खण्ड–रूद्रपुर, जनपद–उधम सिंह नगर निवासी 35 वर्षीय, स्नातक श्रीमती बबली कोरंगा ने अपनी मेहनत, सीखने की ललक और नवाचार के बल पर एक साधारण ग्रामीण महिला से सफल उद्यमी तक का प्रेरणादायक सफर तय किया है। समाजसेवा एवं उद्यमी बनने का जुनून वर्ष 2020 में प्रारम्भ हुआ जब वो शिव शक्ति स्वयं सहायता समूह से जुड़ीं और उनके आत्मनिर्भर बनने की यात्रा प्रारम्भ हुई। समूह के माध्यम से उन्होंने गोबर से धूपबत्ती एवं अगरबत्ती बनाने का प्रशिक्षण लिया। इसके बाद उन्होंने स्वयं यूट्यूब के माध्यम से गोबर से मूर्तियाँ एवं दीये बनाना सीखा और मात्र ₹ 2,000 के निवेश से अपना लघु उद्यम शुरू कर लगभग ₹ 10,000 की आय अर्जित की। वर्ष 2021 में उन्होंने समेटी, पंतनगर से उन्नत मशरूम उत्पादन का प्रशिक्षण प्राप्त कर मशरूम उत्पादन की छोटी सी इकाई स्थापित की। उत्पादन के उत्साहजनक परिणाम ने उनके आत्मविश्वास को और मजबूत कर दिया। यहीं न रूकते हुए उन्होंने समेटी, पंतनगर द्वारा आयोजित विभिन्न प्रशिक्षणों जैसे जैविक कृषि, खाद्य प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन, उद्यमिता विकास तथा कृषि आधारित व्यवसाय में भाग लेकर अपने ज्ञान एवं कौशल का निरंतर विस्तार किया। समय–समय पंतनगर विश्वविद्यालय तथा पर ऊधमसिंहनगर जिला मुख्यालय, रूद्रपुर में होने वाले विभिन्न कार्यक्रमों के द्वारा उन्हें अपने उत्पादों के प्रदर्शन के साथ–साथ महिला उद्यमी की पहचान बनी। विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों के तकनीकी मार्गदर्शन ने भी उनके उद्यम को नई दिशा प्रदान की। वर्तमान में श्रीमती कोरंगा लीज पर जमीन लेकर जैविक विधि से सब्जियां, फूलों की खेती, मशरूम, हल्दी, जूट से बने बैग, फोल्डर, ईको टूरिज्म जैसी गतिविधियों को मूर्त रूप दे रही हैं। आज श्रीमती कोरंगा ''बबली एंटरप्राइजेज'' की संस्थापक हैं और न केवल ग्रामीण महिलाओं बल्कि अनेक युवाओं के लिए प्रेरणा स्रोत हैं। उनके उत्कृष्ट कार्यों का प्रसारण ''डीडी किसान'' पर किया गया है। आज अनेक सफलताएं उनके कदम चूम रही हैं और अलग–अलग प्लेटफार्म पर अनेक सम्मान जैसे– लखपति दीदी सम्मान, राष्ट्रीय ग्रामीण हीरो सम्मान, उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी एवं उत्तरांचल विश्वविद्यालय, देहरादून द्वारा सम्मान, पंतनगर विश्वविद्यालय द्वारा मशरूम एवं उद्यमिता सम्मान सहित अनेक पुरस्कार मिल चुके हैं। उनकी सफलता यह सिद्ध करती है कि सीखने की ललक, संस्थागत सहयोग और दृढ़ संकल्प के माध्यम से ग्रामीण महिलाएँ आत्मनिर्भर बनकर समाज में सशक्त परिवर्तन ला सकती हैं।

निदेशक की कलम से

किसानों के आजीविका सुधार एवं आय बढ़ोत्तरी ही कृषि एवं कृषि से जुड़े अधिकारियों एवं कृषि वैज्ञानिकों की सार्थकता सिद्ध करेगी। कृषि वैज्ञानिकों के साथ–साथ कृषकों की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ करने हेतु राज्य सरकार भी तत्पर है एवं सरकार द्वारा अनेक कृषक कल्याणकारी योजनाएं एवं अनुदान भी उपलब्ध कराया जा रहा है। मैं समस्त कृषकों से अपील करूंगा कि कृपया वे इन योजनाओं का लाभ उठाते हुए अपनी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ करें। यद्यपि उत्तराखण्ड में पर्वतीय कृषि की अपनी जटिलतायें हैं और इन प्रतिकूल परिस्थितियों में भी अनेक किसान कृषि के लाभकारी उद्यमों को अपनाकर आर्थिकी मजबूत कर रहे हैं। ये कृषक क्षेत्र के अन्य कृषकों हेतु आदर्श व प्रेरणाश्रोत के रूप में भी उभर रहे हैं। इसके विपरीत बहुत से ऐसे भी कृषक हैं जो परम्परागत खेती करते आ रहे हैं, परिणाम स्वरूप उनके आर्थिकी में आशा के अनुरूप बढ़ोत्तरी नहीं हो रही है। वैज्ञानिकों की वास्तविक परीक्षा इनके विकास की है। कृषि विज्ञान केन्द्र व पंतनगर मुख्यालय के वैज्ञानिक ऐसे काश्तकारों के लिए जनपद के आवश्यकतानुसार प्रशिक्षण, अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन, ऑन फार्म ट्रायल, कृषक–वैज्ञानिक संवाद जैसे कार्यक्रम संचालित कर कृषकों को लाभान्वित कर रहे हैं। दूरस्थ क्षेत्रों में वैज्ञानिकों का कृषक समुदाय के विकास हेतु कार्य करने पर उन्हें बधाई देता हूँ। कृषि एवं कृषक कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के सहयोग से पूरे देश में जून, 2026 में 'खेत बचाओ अभियान' चलाया गया, जिसमें कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों ने बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया। मैं इसके लिए सभी वैज्ञानिकों को बधाई ज्ञापित करता हूँ। पत्रिका को मूर्त रूप देने वाले डा. बी.डी. सिंह प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) की सराहना व धन्यवाद देना भी अपना कर्तव्य मानता हूँ।

(डा० जितेन्द्र क्वात्रा)
निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड

आभार

विभिन्न शोध संस्थानों द्वारा अनवरत रूप से उन्नत तकनीक विकसित किये जाते रहते हैं, परन्तु प्रायः इनका समुचित प्रचार–प्रसार न होने के कारण कृषक इनसे वंचित रह जाते हैं। कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिक शोध एवं प्रसार कार्यक्रम के बीच सेतु का कार्य करते हुए तकनीक हस्तान्तरण में महत्ती योगदान देते हैं। वर्तमान में कृषक डिजिटल कृषि तकनीक जैसे टोल फ्री हेल्प लाईन, इन्टरनेट, बल्क एस.एम.एस., वाट्सऐप, वीडियो कान्फ्रेंसिंग आदि का प्रयोग कर रहे हैं, जिससे समस्या का प्रभावी समाधान मिलता है। पर्वतीय क्षेत्र में महिलायें जिनकी ''कृषि के रीढ़ की हड्डी'' के रूप में पहचान है, समूह के माध्यम से डेयरी, कुक्कुट पालन, मशरूम, मसाले, मंडुवा, हल्दी, रामदाना आदि के मूल्यवर्धन से अपने आय संवर्धन के साथ–साथ अनेक अन्य को भी प्रगति की राह दिखा रही है। अनेक कृषक इस संस्थान से प्रशिक्षण प्राप्त कर न सिर्फ अपनी आजीविका संवर्धन बल्कि दूसरे ग्रामीण युवाओं को भी स्वरोजगार अपनाने हेतु प्रेरित कर रहे हैं। इस पत्रिका को तैयार करने में निदेशक प्रसार शिक्षा से निरन्तर प्रोत्साहन हेतु मैं उनका आभारी हूँ। मैं कृषि विज्ञान केन्द्र के प्रभारी अधिकारियों, वैज्ञानिक तथा मुख्यालय के सभी वैज्ञानिक/कार्मिक का आभारी हूँ, जिन्होंने पत्रिका को तैयार करने में अमूल्य सहयोग दिया है। पत्रिका को और बेहतर बनाने में आपके सुझाव हमारे लिए महत्वपूर्ण होंगे। आप अपने सुझाव पत्रिका के अंतिम पेज पर अंकित फोन नम्बर अथवा मेल आई.डी. पर प्रेषित कर सकते हैं।

(डा० बी.डी. सिंह)
प्राध्यापक (सस्य विज्ञान)

प्रसार शिक्षा निदेशालय, गो.ब. पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर (ऊधम सिंह नगर), उत्तराखण्ड
दूरभाष : 05944–233336, 233811, ई–मेल : dirextedugbp@gmail.com
हेल्प लाइन : 05944–234810
संरक्षक : डॉ० शिवेन्द्र कुमार कश्यप, कुलपति; मुख्य सम्पादक : डॉ० जितेन्द्र क्वात्रा, निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी
सम्पादक : डॉ० बी.डी. सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान)